



5. ठंड से बचाव

क्या करें

1. पशुओं को समूह में रखें ताकि वे एक-दूसरे की गर्मी से लाभ उठा सकें।
2. ठंड से बचाने के लिए शेड में आग का छोटा प्रबंध करें।
3. सर्द हवाओं से बचाने के लिए पशुओं को शाम के समय शेड में लाएं।
4. बालों की साफ-सफाई नियमित रूप से करें ताकि त्वचा में नमी बनी रहे।

क्या न करें

1. पशुओं को ठंडी हवा या बारिश के संपर्क में ना रखें।
2. आग का प्रबंध करते समय शेड में धुएं का जमाव ना होने दें।
3. बिछावन सामग्री को जलने योग्य चीजों के पास ना रखें।

6. चलन और गतिविधियां

क्या करें

1. दिन में थोड़ी देर पशुओं को खुली जगह पर चलने-फिरने दें।
2. पशुओं को धूप में लाएं ताकि वे प्राकृतिक गर्मी का आनंद ले सकें।
3. सक्रियता बनाए रखने के लिए उन्हें हल्की गतिविधियों में संलग्न करें।

क्या न करें

1. पशुओं को पूरे दिन शेड में बंद न रखें।
2. ठंडे और गीले स्थानों पर उन्हें न छोड़ें।

7. पानी और स्वच्छता

क्या करें

1. पानी को गुनगुना करके ही पिलाएं।
2. पानी के बर्तन को नियमित रूप से साफ करें।
3. पानी में खनिज मिलाकर दें ताकि उनकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़े।

क्या न करें

1. बर्फीले या अत्यधिक ठंडे पानी का उपयोग न करें।
2. गंदे पानी का सेवन न करने दें।

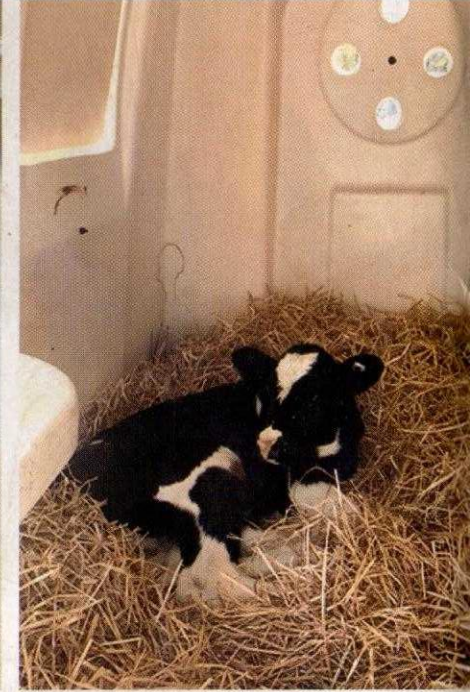
निष्कर्ष (Conclusion):

शीतकालीन मौसम में दुग्ध पशुओं के प्रबंधन में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। शीतकालीन ऋतु में दुग्ध पशुओं के प्रबंधन के लिए समुचित आवास, भोजन, स्वास्थ्य, और देखभाल की आवश्यकता होती है। उचित प्रबंधन न केवल पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता को बनाए रखता है, बल्कि उनकी दीर्घकालिक स्वास्थ्य को भी सुनिश्चित करता है। "क्या करें" और "क्या न करें" का ध्यान रखते हुए यदि पशुओं की सही देखभाल की जाए, तो न केवल उनका स्वास्थ्य बेहतर रहेगा, बल्कि दुग्ध उत्पादन में भी कोई कमी नहीं आएगी। उचित पोषण, साफ-सफाई, और आवास प्रबंधन के साथ-साथ ठंड से बचाव के उपाय करना हर किसान के लिए जरूरी है। किसानों को चाहिए कि वे इन सुझावों का पालन करें और ठंड के मौसम में अपने पशुओं को स्वस्थ और खुशहाल रखें।

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना (बिहार) संपर्क:-9430602962

शीतकालीन ऋतु में पशुओं का प्रबंधन



RE:7992457574/Jan102025

आलेख

योगेंद्र सिंह जादौन एवं अरविन्द कुमार ठाकुर

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

शीतकालीन ऋतु में पशुओं का प्रबंधन

परिचय

शीतकालीन ऋतु में पशुओं का प्रबंधन एक महत्वपूर्ण कार्य है, क्योंकि ठंड का मौसम पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता पर गहरा प्रभाव डालता है। इस मौसम में पशुओं को ठंड से बचाना, उनके आहार और आवास की विशेष देखभाल करना, और बीमारियों से बचाव के उपाय करना आवश्यक होता है। ठंड के कारण पशुओं की ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ जाती है और यदि सही प्रबंधन न किया जाए, तो दुग्ध उत्पादन में कमी और स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। इस मौसम में पशुओं को ठंड से बचाने के लिए गर्म और सूखे आवास, संतुलित आहार, और साफ पानी की व्यवस्था करना



जरूरी है। साथ ही, नियमित टीकाकरण और स्वच्छता बनाए रखना बीमारियों से बचाव के लिए महत्वपूर्ण है। इन उपायों के माध्यम से किसान न केवल अपने पशुओं का स्वास्थ्य सुरक्षित रख सकते हैं, बल्कि उनकी उत्पादकता को भी बनाए रख सकते हैं। शीतकालीन ऋतु में सही प्रबंधन पशुपालन की सफलता का आधार है। अतः किसानों के लिए यह आवश्यक है कि वे शीतकालीन मौसम में अपने पशुओं के लिए उचित आवास, पोषण और स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित करें, ताकि पशु स्वस्थ रहें और उनकी उत्पादकता बनी रहे।

पशुओं को स्वस्थ रखने और उनकी उत्पादकता बनाए रखने के लिए निम्नलिखित उपायों को अपनाकर ठंड के मौसम में पशुओं की देखभाल की जा सकती है:

शीतकालीन ऋतु में पशुओं के प्रबंधन के लिए “क्या करें” और “क्या न करें”

शीतकालीन ऋतु में दुग्ध पशुओं का उचित प्रबंधन न केवल उनकी उत्पादकता बनाए रखने में सहायक होता है, बल्कि उनके स्वास्थ्य और जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए भी जरूरी है। ठंड के मौसम में कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जैसे कि ठंड से बीमारियाँ, दुग्ध उत्पादन में कमी, और ऊर्जा की अधिक आवश्यकता। इस लेख में शीतकालीन मौसम में दुग्ध पशुओं के प्रबंधन के लिए “क्या करें” और “क्या न करें” को विस्तार से समझाया गया है।

1. आवास

क्या करें

- पशुओं के रहने के स्थान को गर्म और सूखा रखें।
- शेड के फर्श पर पुआल, भूसा या अन्य सामग्री का बिछावन करें ताकि पशु ठंडी जमीन से बच सकें।
- ठंडी हवा को रोकने के लिए खिड़कियों और दरवाजों पर मोटे पर्दे लगाएं।
- वेंटिलेशन का ध्यान रखें ताकि अंदर ताजी हवा आती रहे और नमी न बढ़े।
- पशुओं को ओस और बारिश से बचाने के लिए मजबूत छत और शेड बनाएं।

क्या न करें

- पशुओं को खुले में रातभर न छोड़ें।
- गंदगी और नमी वाले स्थान पर पशुओं को न रखें।

- शेड को पूरी तरह बंद न करें, क्योंकि इससे वेंटिलेशन प्रभावित हो सकता है।
- फर्श पर बिछावन को गंदा या गीला न छोड़ें।

2. आहार और पोषण

क्या करें

- पशुओं को ऊर्जा युक्त आहार जैसे मक्का, बाजरा और दलहनी चारा दें।
- सूखा चारा और हरी घास का संतुलित मिश्रण उपलब्ध कराएं।
- खनिज मिश्रण और नमक का सेवन सुनिश्चित करें।
- गुनगुना पानी पिलाएं ताकि ठंड में पशु ज्यादा ऊर्जा न खर्च करें।
- दिन में दो से तीन बार भोजन दें और उनकी पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करें।

क्या न करें

- ठंडा पानी न पिलाएं।
- एक ही बार में अधिक भोजन न दें, इसे छोटे हिस्सों में बाँटकर दें।
- सड़े-गले चारे या खराब अनाज का उपयोग न करें।
- खनिजों और विटामिन की कमी न होने दें।



3. स्वास्थ्य और देखभाल

क्या करें

- ठंड के मौसम से पहले पशुओं का टीकाकरण कराएं।
- नियमित रूप से पशुओं की स्वास्थ्य जांच कराएं।
- बीमार पशुओं को बाकी समूह से अलग रखें।
- थनों की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें, विशेषकर दूध निकालने से पहले और बाद में।
- त्वचा को नरम और स्वस्थ रखने के लिए सरसों या नारियल के तेल से मालिश करें।

क्या न करें

- बीमार पशुओं को बिना इलाज के ना छोड़ें।
- संक्रमित या संदिग्ध पशुओं को स्वस्थ पशुओं के साथ ना रखें।
- सर्दी-जुकाम या खांसी के लक्षणों को अनदेखा ना करें।
- गंदे और ठंडे पानी से थनों को ना धोएं।



4. दुग्ध उत्पादन

क्या करें

- दूध निकालने का समय नियमित रखें।
- दूध निकालने से पहले थनों को गर्म पानी और साफ कपड़े से साफ करें।
- दूध निकालने के बाद थनों पर एंटीसेप्टिक लगाएं।
- दूध निकालने के लिए स्वच्छ उपकरणों का ही उपयोग करें।

क्या न करें

- दूध निकालने में देरी न करें, इससे थनों में संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है।
- गंदे उपकरणों का उपयोग न करें।
- थनों की मालिश में रसायन युक्त उत्पादों का उपयोग न करें।